पोस्ट-कोवडि शक्षिा हेतु नया दृष्टकिोण

चर्चा में क्यों?

कोवडि-19 संक्रमण की दूसरी लहर के कारण पूरे देश में छात्रों की शक्षिा प्रभावति हुई है।

प्रमुख बदुि:

चतिाएँ:

- **ऑनलाइन शक्षिा की उपलब्धता:**
  - ऑनलाइन शक्षिा की कल्पना शक्षिा के प्रसार के वैकल्पकि साधन के रूप में की गई थी, लेकनि भारतीय छात्रों के लयि वर्तमान परस्थितियों को देखते हुए यह भी वफिल हो जाती है।
  - इस प्रणाली की उपलब्धता और वहनीयता अब एक बाधा के रूप में उभरी है।
  - 'ई-शक्षिा' उच्च और मध्यम वर्ग के छात्रों हेतु एक वशिेषाधकिार के रूप में उभरी है, यह नम्नि मध्यम वर्ग के छात्रों और गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों के लयि एक बाधा सद्धि हुई है।
- **इंटरनेट पर दीर्घकालकि नरि्भरता:**
  - छोटे बच्चों के लयि इंटरनेट पर लंबे समय तक संपर्क के अन्य नहितिार्थ भी हैं।
  - यह युवा पीढ़ी की सोचने की क्षमता संबंधी प्रक्रयिा के वकिास में बाधा उत्पन्न कर सकता है।
- **वशि्लेषणात्मक क्षमता में कमी:**
  - अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न ऑनलाइन शक्षिा से सीखने के परणिामों के संबंध में उत्पन्न हुए हैं।
  - गूगल सभी प्रश्नों के उत्तर के लयि प्रमुख और एकमात्र मंच है, इसके परणिामस्वरूप छात्रों की स्वयं की सोचने की क्षमता प्रभावति हो रही है।
    - भारत में आधुनकि शक्षिा की स्थापना के समय से ही वैज्ञानकि दृष्टकिोण के प्रमुख मानदंड पर बल दयिा गया था।
- **छात्र अलगाव में वृद्धि:**
  - महामारी और भौतकि कक्षा शक्षिण की कमी के कारण छात्रों के मन में अलगाव की एक अजीबोगरीब भावना वकिसति हो रही है। यह बहुत गंभीर मुद्दा है। दूसरी लहर का आघात छात्रों के मन पर गहरी छाप छोड़ेगा।
  - शारीरकि संपर्क और गतविधियिाँ पूरी तरह से अनुपस्थति रही हैं और यह भी नई समस्याओं में योगदान दे सकती है।

संभावति समाधान:

- **अवसंरचनात्मक उपयोग:**
  - बुनयिादी ढाँचे का पूरी तरह से उपयोग कयिा जाना चाहयि और यदआिवश्यक हो तो शक्षिा प्रदान करने हेतु कई अन्य उपायों पर नविेश करना चाहयि।
    - कक्षा के माध्यम से शक्षिण हमें सूचना के अलावा और भी बहुत कुछ प्रदान करने का अवसर देता है।
- **नई सामग्री;**
  - संस्थानों के मौजूदा पाठ्यक्रम के ढाँचे के भीतर कक्षा शक्षिण की अनुपस्थतिि को दूर करने के लयि प्रत्येक वषिय हेतु नई सामग्री नरि्माण पर वचिार करना चाहयि।
  - यह सामग्री एक नए प्रकार की होगी जो आत्म-व्याख्यात्मक होगी, और कक्षा के नम्नितम IQ को देखते हुए इसे आकर्षक होना चाहयि।
  - सामग्री का छात्रों के दमिाग पर वही प्रभाव पैदा होना चाहयि, जैसे कअिच्छी कताबिें सोचने की क्षमता प्रदान करती है।
- **व्यक्तगित पर्यवेक्षण:**
  - शक्षिकों और गैर-शक्षिण कर्मचारयिों को काम की नगिरानी के लयि साप्ताहकि आधार पर छात्रों से संबंधति क्षेत्रों (स्कूल क्षेत्र में और आसपास) का दौरा करना चाहयि।
  - उन्हें पठन सामग्री को समझने में छात्रों के सामने आने वाली समस्याओं पर ध्यान देना चाहयि और यह भी कक्यिा संबंधति सामग्री उन तक समय पर पहुँच रही है।
- **नई मूल्यांकन प्रणाली:**
  - मूल्यांकन वशि्लेषण की क्षमता पर आधारति होना चाहयि और प्रश्नों को इस तरह से तैयार कयिा जाना चाहयि कछिात्रों को प्रत्येक वषिय

पर प्रश्नों के उत्तर देने हेतु दिमाग लगाने की आवश्यकता हो।
- **टीकाकरण को प्राथमिकता देना:**
  - इसके अलावा सरकार को इस सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिये जितनी जल्दी हो सके पूरे शिक्षण समुदाय का टीकाकरण करने की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिये।

ई-लर्निंग से संबंधित सरकारी पहलें:

- **E-PG पाठशाला:**
  - अध्ययन हेतु ई-सामग्री प्रदान करने के लिये मानव संसाधन विकास मंत्रालय की एक पहल।
- स्वयम (SWAYAM)**:**
  - यह ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के लिये एक एकीकृत मंच प्रदान करता है।
- **नीट (NEAT):**
  - इसका उद्देश्य सीखने वाले की आवश्यकताओं के अनुसार सीखने को अधिक व्यक्तिगत और अनुकूलित बनाने के लिये आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करना है
- प्रज्ञाता दिशा-निर्देश:
  - मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) ने प्रज्ञाता (PRAGYATA) शीर्षक से डिजिटल शिक्षा पर दिशा-निर्देश जारी किये।
  - PRAGYATA दिशा-निर्देशों के तहत किंडरगार्टन, नर्सरी और प्री-स्कूल के छात्रों के माता-पिता के साथ बातचीत करने के लिये प्रतिदिन केवल 30 मिनट स्क्रीन टाइम की सिफारिश की जाती है।
- **प्रौद्योगिकी वर्द्धन शिक्षा पर राष्ट्रीय कार्यक्रम (NPTEL):**
  - NPTEL भारतीय विज्ञान संस्थान बंगलूरू के साथ सात भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईटी) द्वारा शुरू की गई MHRD की एक परियोजना है।
  - इसे वर्ष 2003 में शुरू किया गया था और इसका उद्देश्य इंजीनियरिंग, विज्ञान और प्रबंधन में वेब और वीडियो कोर्स कराना था।

आगे की राह:

- कोविड -19 ने दर्शाया है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली किस हद तक असमानताओं से ग्रस्त है।
- इस प्रकार निजी और सार्वजनिक शिक्षा क्षेत्र के बीच तालमेल के लिये नई प्रतिबद्धताओं की आवश्यकता है। इस संदर्भ में शिक्षा को एक सामान्य वस्तु बनाने की आवश्यकता है और डिजिटल नवाचार इस उपलब्धि को हासिल करने में मदद कर सकता है।

स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/new-approach-for-post-covid-education